Amire Ahle Sunnat Aur Tazeeme Sadaat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 360
Weekly Booklet : 360

अमीरे अहले सुन्नत और ता'ज़ीमे सादात

(क़िस्त : अव्वल)

सफ़्हात 36

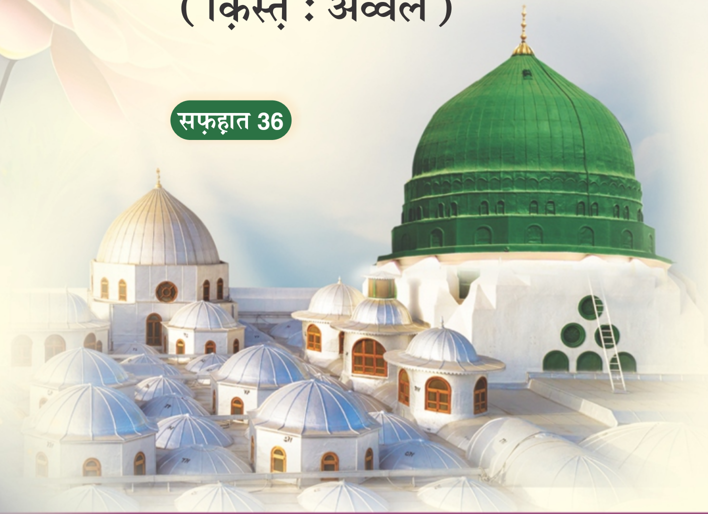

सय्यिद किसे कहते हैं ? 11
सादाते किराम की बारगाह में 25 लाख रुपै का नज़राना 19
34 साल पहले की वसिय्यत 22
सादाते किराम के लिये स्पेशयल पैग़ाम 30

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत और ता'ज़ीमे सादात**

सिने त़बाअ़त : मुह़र्रमुल ह़राम **1446** हि., जुलाई **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत और ता'ज़ीमे सादात**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکرج ۵۱ ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

अमीरे अहले सुन्नत की वसिय्यत

आ़शिके़ सहा़बा व अहले बैत, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक सय्यिद साहि़ब के इन्तिक़ाल पर राक़िमुल हु़रूफ़ को कुछ इस त़रह़ वॉट्सएप भेजा जो इस रिसाले की मुनासबत से नोक पलक संवार कर पेश किया जा रहा है, अमीरे अहले सुन्नत के इस पैग़ाम में हर आ़शिके़ रसूल के लिये बहुत बड़ा दर्स है, ग़ौर से पढ़िये और इसे समझ कर अपने लौहे़ दिल (या'नी दिल की तख़्ती) में मह़फ़ूज़ कर लीजिये। आप फ़रमाते हैं : "अगर आख़िरत में बे ख़ौफ़ होना चाहते हैं तो सय्यिदों से डरा करें (या'नी उन के बारे में कोई भी ना मुनासिब बात कहने, सुनने और देखने से बचें), اِنْ شَآءَالله आख़िरत में बे ख़ौफ़ हो जाएंगे। क़ियामत के दिन सय्यिदों के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से "**لَا تَحْزَنْ या'नी ग़म न कर**" का पैग़ाम मिलेगा बल्कि कहा जाएगा : मेरी आल से मह़ब्बत करने वाले आज आ जा ! मेरे दामने रह़मत में छुप जा और जन्नत में दाख़िल हो जा ! اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم।"

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे
फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने आले रसूल की शानो अ़ज़मत में कई रसाइल, मनाक़िब, बयानात और बीसियों अश्आ़र तह़रीर फ़रमाए हैं। आप की सोह़बत में रहने वालों और दुन्या भर में आप के मदनी मुज़ाकरे देखने सुनने वालों ने बारहा दा'वते इस्लामी के चेनल पर देखा सुना होगा कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बिल ख़ुसूस अपने मुरीदीन व मो'तक़िदीन (या'नी मह़ब्बत करने वालों) और बिल उ़मूम

तमाम मुसल्मानों को सादाते किराम के अदबो एह्तिराम की बड़ी ताकीद फ़रमाते हैं, आप का अपना अन्दाज़ येह है कि सादाते किराम को ख़ूब सूरत अल्क़ाबात से पुकारते हैं, सादाते किराम से इज्ज़ो इन्किसार से गुफ़्तगू करते हैं और अगर कोई चीज़ तक़्सीम फ़रमा रहे हों और सय्यिद साहिब भी मौजूद हों तो आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की त़रह़ उन को आ़म अफ़राद की ब निस्बत सय्यिद होने की वज्ह से डबल देते हैं बल्कि देखने वालों ने देखा कि सादाते किराम को देने का अन्दाज़ इस क़दर नियाज़ मन्दाना (या'नी आ़जिज़ी भरा) इख़्तियार करते हैं कि यूं गुमान होता है जैसे "**दे**" नहीं बल्कि सय्यिद साहिब से कुछ "**ले**" रहे हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सादाते किराम के अदबो ता'ज़ीम के वाक़िआ़त की एक बहुत बड़ी लिस्ट (List) है जो इस मुख़्तसर से रिसाले में बयान करना मुश्किल है। निय्यत है कि अ़ज़ीम आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के उ़र्स मुबारक 25 सफ़र शरीफ़ की निस्बत से इस रिसाले की दूसरी क़िस्त़ "अमीरे अहले सुन्नत के सादाते किराम की ता'ज़ीम के वाक़िआ़त" में कम अज़ कम 25 वाक़िआ़त बयान किये जाएं। **अल्लाह** पाक ख़ैरो इख़्लास से इस की तौफ़ीक़ दे और हमें हमेशा सादाते किराम का बा अदब और बा वफ़ा रखे, क़ियामत में इन के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब करे और जन्नतुल फ़िरदौस में इन का पड़ोस नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيِّن صلّى اللهُ عليه واٰله وسلّم

आले अत़्हार के मैं गीत हमेशा गाऊं ख़ुश रहे मुझ से तेरी आल मदीने वाले

मुझ को सारे सय्यिदों से प्यार है
اِنْ شَآءَ الله मेरा बेड़ा पार है

त़ालिबे दुआ़ए ग़मे मदीना व बक़ीअ़
व बे ह़िसाब मग़्फ़िरत
अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त़्त़ारी मदनी عُفِيَ عَنْهُ
(8 ज़िल ह़ज शरीफ़ 1444 हिजरी, शबे हफ़्ता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत और ता'ज़ीमे सादात

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 34 सफ़हात का रिसाला : **"अमीरे अहले सुन्नत और ता'ज़ीमे सादात"** पढ़ या सुन ले उसे सादाते किराम के नानाजान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ियामत के दिन शफ़ाअत नसीब फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा ।

اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौला अ़ली को नसीहत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : يَا عَلِيُّ! اِحْفَظْ عَنِّيْ خَصْلَتَيْنِ أَتَانِيْ بِهِمَا جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ أَكْثِرِ الصَّلَاةَ عَلَيَّ بِالسَّحَرِ، وَالِاسْتِغْفَارَ بِالْمَغْرِبِ- ऐ अ़ली ! मुझ से दो आ़दतें याद कर लो जिन्हें जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास लाए : ﴾1﴿ सह़र के वक़्त मुझ पर बहुत ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ना और ﴾2﴿ मग़रिब के वक़्त बहुत ज़ियादा इस्तिग़फ़ार करना ।

(القربۃ الی رب العٰلمین لابن بشکوال، ص90)

हर मरज़ की दवा दुरूद शरीफ़ — दाफ़ेए हर बला दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुई उस की — है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुजद्दिदे वक़्त के कन्धों पर सुवारी

पालकी[1] दरवाज़े पर लगा दी गई, सेंकड़ों दीवाने ज़ियारत के

1... लकड़ी की बनी हुई लम्बाई में चारों त़रफ़ से बन्द दो दरवाज़ों वाली सुवारी को पालकी कहा जाता है, इस के आगे पीछे मोटे डन्डे लगे होते हैं जिसे मज़दूर अपने कन्धों पर रख कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं ।

शौक़ में दरवाज़े पर निगाहें जमाए इन्तिज़ार में खड़े थे कि इतने में वुज़ू कर के ख़ूब सूरत लिबास पहने, सर पर इमामे शरीफ़ का ताज सजाए, बड़े आ़लिमाना वक़ार के साथ घर से बाहर आमद हुई, नूरानी चेहरे से नूर की किरनें फूट रही थीं, आ़शिक़ों के झुरमट से निकल कर मुश्किल से सुवारी तक पहुंचने का मौक़अ़ मिला, पालकी पर सुवार हुए और पालकी चल पड़ी। अभी चन्द क़दम ही चले थे कि अन्दर से आवाज़ आई : सुवारी रोक दीजिये। हुक्म के मुताबिक़ पालकी ज़मीन पर रख दी गई, मज्मए़ पर सन्नाटा छा गया, बे क़रारी और बेचैनी के आ़लम में पालकी से आ़शिक़े माहे रिसालत, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बाहर तशरीफ़ लाए और पालकी उठाने वालों से रोनी सूरत में इर्शाद फ़रमाया : आप को अपने जद्दे आ'ला, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा ! सच बताइये आप में से कौन आले रसूल है ? क्यूं कि मेरे ईमान का ज़ौक़ मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू मह़सूस कर रहा है, अचानक इस त़रह़ के ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ सुवाल को सुन कर उन में से एक मज़दूर सय्यिद ज़ादे शहज़ादे ने नज़रें झुकाए, दबे लहजे में जवाब दिया : मज़दूर से काम लिया जाता है, ज़ात नहीं पूछी जाती, आप ने मेरे नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा दे कर मुझ से मेरा राज़ ज़ाहिर करवाया, मैं चमने मुर्तज़ा, गुलशने फ़ात़िमा का फूल हूं, कोई और काम आता न था, येह काम कर के अपने बाल बच्चों का पेट पाल रहा हूं। अभी सय्यिद ज़ादे की बात मुकम्मल न हुई थी कि वहां मौजूद लोगों ने येह ह़ैरत अंगेज़ मन्ज़र देखा कि आ़लमे इस्लाम के इतने बड़े इमाम

और ज़माने के मुजद्दिद ने अपने सर से इमामा शरीफ़ उतार कर सय्यिद ज़ादे के क़दमों में रख दिया है, आ़शिक़े सादिक़ की आंखों से टपटप आंसू गिर रहे हैं, हाथ जोड़े बड़ी आ़जिज़ी व इन्किसार के साथ कहने लगे : ऐ मुअ़ज़्ज़ज़ शहज़ादे ! मेरी गुस्ताख़ी मुआ़फ़ कर दो, ला इल्मी में ख़त़ा हो गई, जिन के क़दमों की जूती मेरे सर का ताज है मैं ने उन के कन्धों पर सुवारी कर ली ! अगर क़ियामत के दिन आप के नानाजान صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछ लिया : अह़मद रज़ा ! क्या मेरे बेटे के नाज़ुक कन्धे इस लिये थे कि तेरी सुवारी का बोझ उठाएं तो मैं क्या जवाब दूंगा ? उस वक़्त मैदाने क़ियामत में मेरी कैसी रुस्वाई होगी ? बिल आख़िर शहज़ादे से कई बार मुआ़फ़ कर देने का इक़रार लेने के बा'द आ़शिक़े सादिक़ ने इश्क़ में डूबी एक और इल्तिजाए शौक़ पेश की वोह येह कि चूंकि बे इल्मी की सूरत में मुझ से येह कोताही हुई है, अब इस का कफ़्फ़ारा जभी अदा होगा कि आप पालकी में बैठें और मैं अपने कन्धे पर पालकी उठाऊं। लोगों की आंखों से आंसू जारी हो गए और बा'ज़ की चीख़ें निकल गईं जब हज़ार इन्कार के बा वुजूद सय्यिद शहज़ादे को पालकी में बैठना ही पड़ा और आ़लमे इस्लाम का अपने वक़्त का सब से बड़ा आ़लिम व मुफ़्ती बल्कि मुजद्दिद उस सय्यिद शहज़ादे को पालकी में अपने कन्धों पर उठाए लिये जा रहा था।

(अन्वारे रज़ा, स. 415, ज़ुल्फ़ो ज़न्जीर, स. 76 ता 78 मुलख़्ख़सन)

सच कहा है कहने वालों ने :

قدرِ زر، زرگر بِداند   و قدرِ جوہر جوہری

सोने की क़द्र सुनार और हीरे की क़द्र जौहरी जानता है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

सय्यिद साहिब की फ़रमाइश पर 7 दिन में किताब लिख दी

सादाते किराम के इक्रामो ता'ज़ीम का येह एक वाक़िआ़ ही नहीं बल्कि आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की सादाते किराम से महब्बतो अ़क़ीदत पर मुश्तमिल वाक़िआ़त पर कई सफ़हात लिखे जा सकते हैं। इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को 3 शव्वाल शरीफ़ 1329 हिजरी को हज़रते सय्यिद मुहम्मद अहसन साहब बरेल्वी (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) ने एक ख़त़ लिखा कि मैं 10 शव्वाल शरीफ़ को हज पर जा रहा हूं और बहुत से लोग जाते हैं, हज का त़रीक़ा और आदाब लिख कर छाप दें। सय्यिद साहिब की फ़रमाइश को पूरा करते हुए आ़शिक़े माहे रिसालत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सय्यिद साहिब के हुक्म से जल्दी से (सिर्फ़ सात दिन में) 45 सफ़हात पर मुश्तमिल इल्मी दुन्या में मश्हूरो मा'रूफ़ रिसाला "اَنْوَارُ الْبِشَارَةِ فِیْ مَسَائِلِ الْحَجِّ وَالزِّيَارَةِ (1329 हि.)" (हज्जो ज़ियारत के मसाइल में ख़ुशी की बहारें) लिख दिया। (फ़तावा रज़विय्या, 10/725 ब तग़य्युर)

फ़ैज़ाने रज़ा

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के सादाते किराम के अदबो एहतिराम वाले हसीन वस्फ़ (या'न ख़ूबी) से आप के ख़ानवादे (या'नी ख़ानदान) बल्कि आप के मुरीदीन व ख़ुलफ़ा को भी हिस्सए वाफ़िर (या'नी ख़ूब हिस्सा) मिला है। पढ़ने वालों के ज़ौक़ो शौक़ को मज़ीद बढ़ाने के लिये सिर्फ़ एक मुरीद व ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, शैख़ुल अ़रबे वल अ़जम, मेज़बाने मेहमानाने मदीना, क़ुत़्बे मदीना, मुर्शिदे अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का सादाते किराम से मुलाक़ात और अदबो ता'ज़ीम का अन्दाज़ पढ़िये :

सय्यिदी कुत़्बे मदीना और ता'ज़ीमे सादात

कुत़्बे मदीना, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी क़ादिरी रज़वी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की पोती के हां जब बेटे की विलादत हुई तो उन का नाम "**वलीद**" रखा गया। जब कुत़्बे मदीना رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमत में दुआ़ व बरकत के लिये उन्हें पेश किया गया तो आप गोद में ले कर कुछ देर तक दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहे और फिर अपने पड़पोते के पाउं चूमते हुए फ़रमाया : येह "**सय्यिद**" है। क्यूं कि आप की येह पोती ह़ज़रते सय्यिद सामी बरज़न्जी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ज़ौजए मोह़तरमा थीं।

(सय्यिदी ज़ियाउद्दीन अह़मद अल क़ादिरी, 1/532 ब तग़य्युरे क़लील)

कुत़्बे मदीना رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के सादाते किराम से मह़ब्बत भरे अन्दाज़

कुत़्बे मदीना, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी क़ादिरी रज़वी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ सादाते किराम का बेह़द एह़तिराम फ़रमाते, जब कोई सय्यिद साहिब आप से मिलते तो बिग़ैर किसी के बताए हाथ मिलाते ही सय्यिद साहिब के हाथ चूम लेते। इ़श्क़ो मह़ब्बत भरा येह मन्ज़र देख कर आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर दीगर लोग समझ जाते कि येह "**सय्यिद साहि़ब**" हैं।

गोया ब क़ौले शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ :

नसीमे जमाल ने बूए मह़बूब आ़शिक़ के दिमाग़े मह़ब्बत में पहुंचाई

या'नी मह़बूब की ख़ुश्बू ख़ूब सूरत हवा ने सच्चे आ़शिक़ के इ़श्क़ो मह़ब्बत भरे ज़ेह्न में पहुंचा दी।

ग़ज़ालिये दौरां का अदबो एह़तिराम

ग़ज़ालिये ज़मां, ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद सई़द काज़िमी शाह साहि़ब رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के रोकने के बा वुजूद सय्यिदी कुत़्बे मदीना

رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ आप के हाथ चूमते और आप की ता'ज़ीम के लिये ब दिक़्क़त (या'नी तक्लीफ़ के बा वुजूद) खड़े हो जाते। (सय्यिदी ज़ियाउद्दीन अह़मद अल क़ादिरी, 1/531) कभी ऐसा भी होता कि ग़ज़ालिये दौरां और क़ुत़्बे मदीना رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِمَا एक दूसरे के हाथ बल्कि क़दम चूमने में एक दूसरे पर सब्क़त ले जाने की कोशिश फ़रमाते।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का　　*तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 248)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुरीदे कामिल पीरे कामिल का अ़क्स होता है

दर अस्ल इन ह़ज़रात के वाक़िआ़त बयान कर के येह बताना मक़्सूद है कि "**जैसे बेटा बाप का राज़ होता है**" ऐसे ही मुरीदे कामिल अपने पीरे कामिल का परतौ (या'नी अ़क्स) होता है, जब पीरो मुर्शिद आले रसूल का इस क़दर अदबो एह़तिराम करते हैं तो मुरीदे कामिल के अन्दर पीरो मुर्शिद के इस वस्फ़ का असर लाज़िमी त़ौर पर नज़र आएगा और मुरीदे कामिल अपने पीरो मुर्शिद के त़रीक़े पर चलते हुए सादाते किराम के मर्तबे का ख़ूब ख़याल रखेगा क्यूं कि वोह अपने पीरो मुर्शिद का ख़लीफ़ा या वकील इसी सूरत में है कि जब अपने पीरो मुर्शिद के अन्दाज़ व अफ़्आ़ल, अख़्लाक़ व ए'तिक़ाद पर चलने वाला हो। **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आले पाक से उल्फ़तो मवद्दत का वस्फ़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के सदक़े से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ में कूट कूट कर भरा हुवा है। आइये ! अब अपने अस्ल मौज़ूअ़ की त़रफ़ आते हैं और अमीरे अहले सुन्नत के ता'ज़ीमे सादात के वाक़िआ़त व

अन्दाज़ पढ़ते हैं लेकिन सब से पहले येह जान लीजिये कि सादाते किराम या'नी आले रसूल का अदबो एह़तिराम इस लिये ज़रूरी है कि इन पाकीज़ा ह़ज़रात का सिल्सिलए नसब **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलता है और मह़ब्बत का उसूल है कि जब किसी को किसी से मह़ब्बत हो जाए तो उस से निस्बत रखने वाली हर शै से उल्फ़त हो जाती है और अगर किसी शै की निस्बत मह़बूब के बदन से हो जाए तो फिर आ़शिक़े सादिक़ उस का बड़ा एह़तिराम करता है। सादाते किराम से मह़ब्बत का हुक्म तो क़ुरआनो ह़दीस में है, जैसा कि

अहले बैते नबी से मह़ब्बत और इन की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है

पारह 25 **सूरतुश्शूरा** आयत नम्बर 23 में इर्शाद होता है : ﴿قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की मह़ब्बत।"

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और आप के अक़ारिब (या'नी रिश्तेदारों) की मह़ब्बत दीन के फ़राइज़ में से है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 25, अश्शूरा, तह़्तल आयह : 23, स. 894)

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सादाते किराम की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है और इन की तौहीन ह़राम (है)।

(फ़तावा रज़विय्या, 22/420)

"हुसैन" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से सादाते किराम के फ़ज़ाइल पर चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ اَدِّبُوْا اَوْلَادَكُمْ عَلٰى ثَلَاثِ خِصَالٍ: حُبِّ نَبِيِّكُمْ، وَحُبِّ اَهْلِ بَيْتِهٖ، وَقِرَاءَةِ الْقُرْاٰنِ-

या'नी "अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ : अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

की महब्बत, अहले बैत की महब्बत और तिलावते कुरआन।"

(الجامع الصغیر،ص25،حدیث:311)

अहले बैत से हुस्ने सुलूक का सिला

﴾2﴿ जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं क़ियामत के दिन उस का बदला उसे अ़ता फ़रमाऊंगा। (تاریخ ابن عساکر،45/303،حدیث:9884)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : येह ह़दीसे पाक इस बात पर दलालत करती है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (**अल्लाह** पाक की अ़ता से) इनायत फ़रमाने (या'नी देने) वाले हैं और येह बात किसी से ढकी छुपी नहीं, लिहाज़ा उस शख़्स को मुबारक हो जिस की परेशानी वोह दूर फ़रमा दें या उस की पुकार पर तशरीफ़ ले आएं और उस की ह़ाजत व ज़रूरत पूरी फ़रमा दें। (فیض القدیر،6/223،تحت الحدیث:8821)

शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पाने के लिये

﴾3﴿ जो शख़्स वसीला ह़ासिल करना चाहता है और येह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो जिस के सबब मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूं तो उसे चाहिये कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें ख़ुश करे। (الشرف المؤبد،ص54)

अहले बैते अत़्हार की महब्बत ज़रूरी है

﴾4﴿ हमारे अहले बैत की महब्बत को लाज़िम पकड़ लो क्यूं कि जो **अल्लाह** पाक से इस ह़ाल में मिला कि वोह हम से महब्बत करता है तो **अल्लाह** पाक उसे मेरी शफ़ाअ़त के सबब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और उस की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है! किसी बन्दे को उस का अ़मल उसी

सूरत में फ़ाएदा देगा जब कि वोह हमारा (या'नी मेरा और मेरे अहले बैत का) हक़ पहचाने। (معجم اوسط، 1/606، حدیث:2230) आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी ना'तिया किताब "वसाइले बख़्शिश" के सफ़ह़ा नम्बर 513 पर लिखते हैं :

अब शफ़ाअ़त पए अहले बैत या शफ़ीअ़ल वरा कीजिये

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सय्यिद किसे कहते हैं ?

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "सय्यिद" सिब्त़ैने करीमैन (या'नी ह़ज़रत इमामे ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا) की औलाद को कहते हैं।

(फ़तावा रज़विय्या, 13/361)

सय्यिद का लुग़वी मा'ना "सरदार" है। बर्रे सग़ीर में इस्तिलाह़न उन ह़ज़रात को सय्यिद कहा जाता है जो ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا की औलाद हैं। अ़रब ममालिक में हर मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स को "सय्यिद" और ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا की औलाद को "शरीफ़ या ह़बीब" कहा जाता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुझे इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ से बेह़द प्यार है

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मुह़र्रम शरीफ़ 1445 हिजरी को होने वाले बयान में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने ह़ाज़िरीन को मुख़ात़ब करते हुए कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया : आप सब गवाह रहियेगा ! मुझे इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ से प्यार है। मुझे इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ से उस

वक़्त से मह़ब्बत है जब मैं बचपन में उन का नाम मुबारक भी सह़ीह़ त़रह़ नहीं ले पाता था मगर उस वक़्त भी मेरे दिल में येह ख़याल होता था कि येह बड़ी शानो अ़ज़मत के मालिक हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! हम सब को इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से प्यार है और आप से निस्बत रखने वाली हर शै से प्यार है। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मुझे सय्यिदों से प्यार है कि येह औलादे रसूल हैं। करबला में नवासए रसूल इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर होने वाले मज़ालिम का बयान सुन कर मेरा भी दिल करता है कि फूट फूट कर रोऊं मगर हमें सब्र का हुक्म है और अगर बे इख़्तियारी में आंसू आ जाएं तो येह बहुत बड़ी सआ़दत की बात है। (बयान बनाम : शाने शहीदे करबला, 10 मुह़र्रम शरीफ़ 1445)

आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत अपनी ना'तिया किताब "वसाइले बख़्शिश" में लिखते हैं :

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 337)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुझे या सय्यिदी न कहा जाए

जैसा की अभी बयान हुवा कि "**सय्यिद**" का लुग़वी मा'ना "**सरदार**" है और सदियों से लोग उ़लमा व मशाइख़ को "**या सय्यिदी या'नी ऐ मेरे सरदार**" कह कर मुख़ात़ब करते आए हैं, मुख़्तलिफ़ अ़रबी कुतुब में इस को देखा जा सकता है। बारहा मदनी मुज़ाकरों वग़ैरा में आ़शिक़ाने रसूल अमीरे अहले सुन्नत को "**या सय्यिदी**" कह कर मुख़ात़ब करते हैं जो कि शर्अ़न बिल्कुल जाइज़ है मगर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बर बिनाए आ़जिज़ी (या'नी इन्किसार की वज्ह से) अपने मह़ब्बत करने वालों को फ़रमाते हैं कि मुझे "**या सय्यिदी**" न कहा जाए

क्यूं कि इस से लोगों को सय्यिद होने का इश्तिबाह (या'नी शक) होता है जब कि मैं सय्यिद नहीं बल्कि "मेमन" हूं। (मदनी मुज़ाकरा, क़िस्त नम्बर : 2261)

आ'ला ह़ज़रत के अ़मल से रोशनी लेते हुए

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه शीरीनी वग़ैरा अश्या बांटने में आ़म लोगों की ब निस्बत सादाते किराम को आले रसूल होने के सबब "डबल" अ़त़ा फ़रमाया करते थे, इसी ख़ूब सूरत अदा को अदा करते हुए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी सादाते किराम को ईदी हो या कुछ और तोहफ़ा डबल अ़त़ा फ़रमाते हैं, येही नहीं बल्कि आप सादाते किराम को बड़े मुअद्दबाना अल्फ़ाज़ मसलन सरकार, शहज़ादे, शहज़ादए आ़ली वक़ार, बापूए आबरूदार (या'नी इ़ज़्ज़तो एह़तिराम वाले) वग़ैरा से पुकारते हैं।[1]

सादाते किराम के अदबो एह़तिराम के चन्द अन्दाज़

येह ह़क़ीक़त है कि इ़श्के़ रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अमीरे अहले सुन्नत फ़ना फ़िर्रसूल[2] के अ़ज़ीम दरजे पर पहुंचे हुए हैं और बन्दा जिस

1... اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी का दीनी काम बहुत सारी जगहों में हो रहा है और हर जगह लोग बापू का मत़लब नहीं समझते, लिहाज़ा अब "**बापू**" के बजाए "सय्यिद साहि़ब" कहने की तरग़ीब है क्यूं कि येह लफ़्ज़ ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ भी है और आ़म आदमी भी इस का मत़लब समझ सकता है।

2... **फ़ना फ़िर्रसूल की ता'रीफ़ :** ह़ज़रते इमाम सिराजुद्दीन रफ़ाई मख़्ज़ूमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़ना फ़िर्रसूल का मत़लब येह है कि इन्सान ज़ाहिरी और बात़िनी त़ौर पर हमेशा नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त का लिह़ाज़ रखे। हर वक़्त और हर काम में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा पेशे नज़र रहे। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही को अपने तमाम मुआ़मलात का वसीला, तमाम राज़ों का मर्कज़ और हर मुश्किल को ह़ल करने वाला समझे और येह यक़ीन रखे कि **अल्लाह** पाक की हर मदद, हर इनायत और हर अ़त़ा हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के सदक़े हर एक को मिल रही है। अल ग़रज़ सिर्फ़ प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बातें सुने, आप ही के तसव्वुर में गुम रहे और आप ही के ज़रीए **अल्लाह** पाक तक पहुंचने की कोशिश करे। (قلادۃ الجواہر، ص294 ملخصاً)

से मह़ब्बत करता है उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से भी प्यार करता है। जो अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरो दीवार, शहर व मज़ार से बे पनाह अ़क़ीदत रखता हो वोह अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किस क़दर उल्फ़तो मुवद्दत रखता होगा। आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सादाते किराम का बड़ा अदबो एह़तिराम करते और उन की मौजूदगी में ऊपर बैठना ना गवार मह़सूस करते हैं। बारहा सादाते किराम को अपने साथ कुरसी पर ऊपर बिठाते हैं, आप की उ़म्र ईसवी सिन के ए'तिबार से जून 2024 को तक़रीबन 74 साल हो चुकी है और अब ज़ो'फ़े पीरी (या'नी बुढ़ापे की कमज़ोरी) की वज्ह से चूंकि नीचे बैठना बहुत दुश्वार है वरना जब पहले इस क़दर नक़ाहत (या'नी कमज़ोरी) वाली सूरत न थी तो आप भी नीचे बैठ जाते। कभी यूं भी फ़रमाते : लोग मुझे मस्नद पर बिठा देते हैं ह़ालां कि मुअ़ज़्ज़ज़ सादाते किराम नीचे बैठे हैं, मुझे अच्छा नहीं लगता कि सादाते किराम नीचे तशरीफ़ फ़रमा हों और मैं इन का ग़ुलाम हो कर ऊपर बैठूं।

आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी ना'तिया किताब "वसाइले बख़्शिश" में लिखते हैं :

भीक दे उल्फ़ते मुस्त़फ़ा की　　सब सह़ाबा की आले अ़बा की
ग़ौसो ख़्वाजा की अह़मद रज़ा की　　मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 128)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सादाते किराम आगे तशरीफ़ ले आएं

अ़रबी मुह़ावरा है कि "اِنَّمَا يَعْرِفُ ذَا الْفَضْلِ ذَوُوْهُ" या'नी फ़ज़ीलत

वाले को सिर्फ़ फ़ज़ीलत वाले ही पहचानते हैं। सादाते किराम के अदबो एह्तिराम के ए'तिबार से येह अ़रबी मुहावरा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ात पर सादिक़ नज़र आता है। अमीरे अहले सुन्नत आले रसूल की बड़ी इ़ज़्ज़त करते हैं, आप फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सादाते किराम की महब्बत मेरी घुट्टी में है। न सिर्फ़ ख़ुद बल्कि बारहा आप दूसरों के सामने भी सादाते किराम के अ़ज़ीमुश्शान मरतबे का परचार करते नज़र आते हैं, जैसा कि आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दा'वते इस्लामी का जिन दिनों अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ होता था, यूंही मुल्क के मुख़्तलिफ़ शहरों में होने वाले सूबाई इज्तिमाआ़त में बारहा आप दुआ़ से पहले कुछ इस त़रह़ ए'लान फ़रमाते थे कि **"इस इज्तिमाअ़ में जितने भी सादाते किराम मौजूद हैं, बराहे करम ! आगे तशरीफ़ ले आएं ताकि उन की बरकत से हमारी दुआ़एं क़बूल हों।"**

सादाते किराम के मुबारक हाथों से दा'वते इस्लामी के सब से पहले फ़ैज़ाने मदीना का संगे बुन्याद

दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मेदार फ़रमाते हैं : दा'वते इस्लामी वालों में सादाते किराम के अदबो एह्तिराम का अन्दाज़ अमीरे अहले सुन्नत की तरबियत का हि़स्सा है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं 1989 में दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में आया। अमीरे अहले सुन्नत का सादाते किराम की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई का अन्दाज़ सब से पहले मेरे सामने कुछ यूं ज़ाहिर हुवा कि 1989 या 1990 में दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ के लिये जगह ली गई। उस वक़्त येह सब से पहला दा'वते इस्लामी का मदनी मर्कज़ बनाम **"फ़ैज़ाने मदीना"** बनने जा रहा था। उस पुर मसर्रत (या'नी ख़ुशियों भरे)

मौक़अ़ पर अ़ज़ीमुश्शान इज्तिमाअ़ का सिल्सिला रखा गया और ए'लान हुवा कि मदनी मर्कज़ के इफ़्तिताह़ (संगे बुन्याद रखने) और बा क़ाइ़दा ता'मीराती काम का आग़ाज़ करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मअ़ ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तशरीफ़ ला रहे हैं। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के बा'द जब संगे बुन्याद रखने का वक़्त आया तो उस मक़ाम पर मैं भी मौजूद था, इस्लामी भाइयों ने अमीरे अहले सुन्नत की ख़िदमत में अपने हाथों से इफ़्तिताह़ (Opening) करने की अ़र्ज़ की तो आप ने बड़ी आ़जिज़ी व इन्किसार से फ़रमाया : येह दा'वते इस्लामी का सब से पहला मदनी मर्कज़ है, मैं इस क़ाबिल कहां कि इस का संगे बुन्याद रखूं। ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी ने बड़ा इसरार किया मगर आप मन्अ़ ही फ़रमाते रहे, बिल आख़िर आप ने इर्शाद फ़रमाया : बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 कम उ़म्र सय्यिद ज़ादों के मुबारक हाथों से संगे बुन्याद रखा जाएगा। रात के उस पहर जितने सादाते किराम मुयस्सर आए उन के बा बरकत हाथों से दा'वते इस्लामी के सब से पहले मदनी मर्कज़ "**फ़ैज़ाने मदीना**" का संगे बुन्याद रखा गया।

मदनी मर्कज़ का संगे बुन्याद

दा'वते इस्लामी के अ़ज़ीमुश्शान मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना की जब इफ़्तिताही़ तक़रीब हुई तो उस में भी 12 सादाते किराम से संगे बुन्याद रखवाया गया। मज़ीद येह कि फ़ैज़ाने मदीना में दाख़िल होने के चन्द दरवाज़े हैं जिन में से एक दरवाज़े का नाम "**बाबे फ़ातिमा**" रखा गया।

सह़ाबा व अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

सह़ाबा व अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उम्मत के लिये नजात और

सलामती का ज़रीआ हैं जैसा कि नानाए ह़सनैन, हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : مَثَلُ اَهْلِ بَيْتِيْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مَّنْ رَّكِبَهَا نَجَا، وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا غَرِقَ या'नी मेरे अहले बैत की मिसाल कश्तिये नूह़ की त़रह़ है, जो इस में सुवार हुवा नजात पा गया और जो इस से पीछे रहा हलाक (या'नी बरबाद) हो गया। (مستدرک، 3/81، حدیث:3365) एक और ह़दीसे पाक में मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे सह़ाबा मेरी उम्मत के लिये अमान हैं, जब येह इस दुन्या से रुख़्सत हो जाएंगे तो मेरी उम्मत पर वोह वक़्त आएगा जिस का उन से वा'दा किया गया है। (مسلم، ص1051، حدیث:6466) आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत अपनी ना'तिया किताब "वसाइले बख़्शिश" में लिखते हैं :

क़ल्ब में इश्क़े आल रख्खा है   ख़ूब इस को संभाल रख्खा है
क्यूं जहन्नम में जाऊं सीने में   इश्क़े अस्ह़ाबो आल रख्खा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 443, 444)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

सय्यिद साहि़ब की त़रफ़ पाउं न फैलाए (वाक़िआ़)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हमराही में 2019 में चन्द आ़शिक़ाने रसूल ह़ज के मुबारक सफ़र पर रवाना हुए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की उ़म्र उस वक़्त तक़रीबन 69 साल थी, आप 8 ज़िल ह़ज शरीफ़ को मिना शरीफ़ के ख़ैमे में थे कि आप को थकन और नक़ाहत वग़ैरा के सबब पाउं फैलाने की ज़रूरत पेश आई मगर सामने की जानिब एक "**सय्यिद साहि़ब**" तशरीफ़ फ़रमा थे। आप ने राक़िमुल हुरूफ़ को एक परची इनायत फ़रमाई जिस में सय्यिद साहि़ब की त़रफ़ ता'ज़ीमन अपने

पाउं न करने का भी ज़िक्र था। अल ग़रज़ "**जब तक सय्यिद साहिब उस तरफ़ बैठे रहे, अमीरे अहले सुन्नत ने उन की तरफ़ अपने पाउं न किये।**"

सादाते किराम से अक़ीदत का ख़ूब सूरत अन्दाज़

سُبْحٰنَ اللّٰه ! जहां अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सादाते किराम की तरफ़ क़दम फैलाने को ख़िलाफ़े अदब समझते हैं वहीं अगर आप को दौराने मुलाक़ात बता दिया जाए कि येह "**सय्यिद साहिब**" हैं तो आप बे साख़्ता उन के हाथ चूम लेते हैं। सादाते किराम के नन्हे मुन्ने प्यारे प्यारे ह़क़ीक़ी मदनी मुन्नों, बच्चों से इन्तिहाई मह़ब्बत और शफ़्क़त का इज़्हार यूं भी हुवा है कि उन के नन्हे मुन्ने प्यारे प्यारे क़दमों को अपने सर पर रख लेते हैं।

ख़ानदाने अमीरे अहले सुन्नत में अहले बैत की याद

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मर्हूमा तीनों बहनों के नाम अहले बैते अत़्हार के मुबारक नामों पर हैं। जैसा कि बड़ी बहन का नाम "**ख़दीजा बाई**"[1] उन से छोटी वाली बहन का नाम "**फ़ात़िमा बाई**" और सब से छोटी बहन का नाम "**ज़हरा बाई**" है।

बिन्ते अ़त्त़ार का जहेज़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इक्लौती साहिब ज़ादी की जब शादी का मौक़अ़ आया, अमीरे अहले सुन्नत चाहते तो आप के चाहने वाले क़ीमती से क़ीमती जहेज़ का ढेर लगा देते मगर सच्चे आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़ल्बो ज़ेह्न में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا का

1... "बाई" मेमनी ज़बान में ता'ज़ीम का लफ़्ज़ है जैसे मर्दों के लिये भाई।

जहेज़ समाया हुवा था। आप ने अपनी इक्लौती लाडली बेटी की शादी भी सादगी और ऐन सुन्नत के मुताबिक़ करने की कोशिश फ़रमाई थी। जहेज़ देते वक़्त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ह़त्तल इम्कान कोशिश कर के किताबों से पढ़ पढ़ कर उसी जहेज़ का एहतिमाम फ़रमाया जो नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वालिदए ह़सनैन, शहज़ादिये कौनैन, सय्यिदह, त़य्यिबा, त़ाहिरा ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللهُ عَنْهَا को इनायत फ़रमाया था। इस ज़माने में ज़ियादा से ज़ियादा जहेज़ लेने और देने की जुस्त्जू में लगे रहने वालों के लिये इस वाक़िए में बेहतरीन नमूना है। जहेज़ येह था : ﴾1﴿ चांदी का बाज़ूबन्द ﴾2﴿ चटाई ﴾3﴿ चक्की ﴾4﴿ मश्कीज़ा ﴾5﴿ मिट्टी के बरतन ﴾6﴿ चमड़े का तक्या वग़ैरा।

सादाते किराम की बारगाह में 25 लाख रुपै का नज़राना

ख़ुशी का मौक़अ़ हो या दुख की घड़ी, महंगाई हो या रमज़ानुल मुबारक में ग़रीबों की ख़ैर ख़्वाही, आप हर मौक़अ़ पर सादाते किराम से हुस्ने सुलूक और ख़ैर ख़्वाही व हमदर्दी करने का फ़रमाते हैं बल्कि बारहा मदनी मुज़ाकरों में डोक्टरों को सादाते किराम का मुफ़्त इलाज करने, मेडीकल स्टोर वालों को मुफ़्त दवाएं देने की तरग़ीब दिलाते रहते हैं।

1444 हिजरी में किसी ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को दा'वते इस्लामी की मजलिसे शूरा के एक रुक्न के ज़रीए अपने साथ एक और इस्लामी भाई को ह़ज पर ले जाने का ख़र्च (तक़रीबन 25 लाख रुपै) देने का पैग़ाम दिया। आप उस साल किसी वज्ह से सफ़रे ह़ज पर नहीं गए थे, आप ने फ़ौरन उस ज़िम्मेदार के ज़रीए रक़म देने वाले को पैग़ाम भेजा कि

येह 25 लाख रुपै सादाते किराम में तक़्सीम कर दिये जाएं और फिर वोह सारी रक़म सादाते किराम की ख़िदमत में नज़्र की गई ।

12 सादाते किराम के घरानों की ख़िदमत का ए'लान

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने 2023/2024 में होने वाली होशरुबा महंगाई के दिनों में रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1445 हिजरी को ए'लान फ़रमाया कि साहिबे सर्वत (या'नी मालदार) कम अज़ कम 12 सादाते किराम ख़ानदान (Families) की ख़िदमत में हो सके तो कम अज़ कम 12 माह तक 12, 12 हज़ार रुपै नज़्र करें या घर का राशन वग़ैरा पेश करें । आ़शिक़े सहा़बा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत के ए'लान से हाथों हाथ कई आ़शिक़ाने सहा़बा व अहले बैत की अच्छी अच्छी निय्यतें दा'वते इस्लामी के चेनल के कॉल सेन्टर को मौसूल हुईं और वोह LIVE मदनी मुज़ाकरे में सुनाई गईं । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ सादाते किराम की ख़िदमत के ह़वाले से अपने रिसाले "**फ़ैज़ाने अहले बैत**" में कुछ यूं लिखते हैं :

इल्तिजाए अ़त्तार

ऐ मालदारो ! दुकानदारो ! डॉक्टरो ! अपनी अपनी ता़क़त के मुता़बिक़ आले रसूल (या'नी सादाते किराम) की ख़िदमत कर के इन के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक क़ल्ब (या'नी दिल) को राह़त पहुंचाइये और बाग़े जन्नत में घर पाने के अस्बाब कीजिये । ज़हे नसीब ! हर दुकानदार येह ज़ेह्न बना ले कि मैं सादाते किराम को सौदा मुफ़्त (Free) या कम अज़ कम No profit no loss या'नी क़ीमते ख़रीद पर दूंगा । यक़ीनन इस त़रह़ भी उन की बड़ी हमदर्दी व ख़ैर ख़्वाही होगी ।

काश ! हर डॉक्टर येह ज़ेह्न बना ले कि मैं सय्यिदों का "चेकअप" फ़्री करूंगा बल्कि हो सका तो मेडीसिन भी फ़्री पेश कर के आले रसूल का दिल ख़ुश करूंगा। रमज़ानुल मुबारक के बा बरकत महीने में पड़ोस में रहने वाले सादाते किराम के यहां सह़री व इफ़्त़ारी, कुरबानी के दिनों में घर में बनने वाली लज़ीज़ डिशों में से कुछ न कुछ उन के घर जा कर अदबो एह़तिराम से उन की नज़्र कीजिये, कैसी नादानी है कि जिन के नानाजान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हम सदक़ा खा रहे हैं उन्ही के नवासे हमारी आसाइशों भरी ज़िन्दगी से कुछ भी फ़ाएदा न उठा सकें। आज अपना माल, अपनी दौलत, अपनी पसन्दीदा चीज़ें सादाते किराम के क़दमों पर निसार करें, फिर देखें उन के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कल क़ियामत के दिन कैसा मालामाल फ़रमाते हैं, ख़ुदा की क़सम ! वोह वक़्त जब न माल काम आएगा और न ओ़हदा व मन्सब अ़ज़ाबों से बचा पाएगा, उस वक़्त बेचैन दिलों के चैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त काम आएगी। अगर दुन्या में इन की आल के साथ अच्छा सुलूक किया होगा, किसी बीमार सय्यिद ज़ादे का मुफ़्त इलाज किया होगा तो क्या अ़जब येही शहज़ादा अपने नानाजान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ कर के हमारे लिये शफ़ाअ़त का ज़रीआ़ बन जाए। और हां ! सिर्फ़ रिज़ाए इलाही की निय्यत से ख़िदमत कीजिये, बाक़ी उन का करम बे ह़द्दो बे इन्तिहा है। नीज़ हरगिज़ हरगिज़ अपने दिल में येह वस्वसा न आने दीजिये कि पता नहीं येह सय्यिद है भी या नहीं ? हमें इस बात की बिल्कुल इजाज़त नहीं कि हम नसब की टोह में पड़ें, बस हमारे लिये उन का बत़ौरे सय्यिद मश्हूर होना ही काफ़ी है।

पैग़ामात की रिकॉर्डिंग में सादाते किराम से इब्तिदा

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ हुसूले सवाब, दुख्यारी उम्मत की ग़म ख़्वारी और ख़ैर ख़्वाही की अच्छी अच्छी निय्यतों से रोज़ाना बीसियों आ़शिक़ाने सहा़बा व अहले बैत की ब ज़रीअ़ए वॉट्सएप इ़यादत व ता'ज़ियत फ़रमाते हैं। बारहा रात भर मुख़्तलिफ़ दीनी मसरूफ़िय्यात और थकन के बा वुजूद आप नेकी की दा'वत के इस अ़ज़ीम काम का दर्द सीने में लिये इस में नाग़ा नहीं होने देते।

ता ह़ाल (14 जून 2024) रोज़ाना औसत़न एक सो पैग़ामात रिकॉर्ड करवाते हैं। आप फ़रमाते हैं : मेरे पास दुआ़ओं के लिये कई नाम आते हैं मगर मेरी कोशिश होती है कि सादाते किराम के नाम से अपने इस नेक काम की इब्तिदा करूं और फिर किसी सय्यिद साहि़ब का नाम मिल जाता है तो उन्हीं के नाम से पैग़ामात का आग़ाज़ करता हूं।

(मदनी मुज़ाकरा, 26 अक्तूबर 2023, क़िस्त़ नम्बर : 2275)

34 साल पहले की वसिय्यत

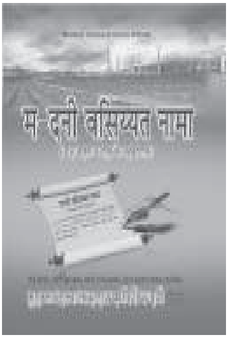

मुह़र्रम शरीफ़ 1411 हिजरी मुत़ाबिक़ 1990 ई. को ऐ़न सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ के सामने बैठ कर अमीरे अहले सुन्नत ने अपना वसिय्यत नामा तरतीब दिया, जिसे "**मदनी वसिय्यत नामा**" के नाम से मक्तबतुल मदीना ने प्रिन्ट किया है।[1] इस में आप ने अपनी मुख़्तलिफ़ वसिय्यतें तह़रीर फ़रमाई हैं।

1... इस रिसाले को पढ़ने के लिये दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org विज़िट कीजिये और अच्छी अच्छी निय्यतों से दूसरों को भी शेयर कीजिये।

आख़िरी वक़्त में भी सादाते किराम से बरकात लेने का ज़ेहन

मदनी वसिय्यत नामा के सफ़्ह़ा नम्बर 4 पर वसिय्यत नम्बर 9 में इर्शाद फ़रमाते हैं : कफ़न अगर आबे ज़मज़म या आबे मदीना बल्कि दोनों से तर किया हुवा हो तो सआ़दत है। काश ! कोई सय्यिद साह़िब सर पर इमामा शरीफ़ सजा दें।

वसिय्यत नम्बर 18 में इर्शाद फ़रमाते हैं : जनाज़ा कोई सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी आ़लिमे बा अ़मल या कोई सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाई या अह्ल हों तो औलाद में से कोई पढ़ा दें मगर ख़्वाहिश है कि सादाते किराम को फ़ौक़िय्यत दी जाए।

वसिय्यत नम्बर 19 में इर्शाद फ़रमाते हैं : ज़हे नसीब ! सादाते किराम अपने रह़मत भरे हाथों क़ब्र में उतार कर अर्‌ह़मुर्राह़िमीन के सिपुर्द कर दें। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 4 ता 5 ब तग़य्युर)

नए आस्तानए आ़लिया का इफ़्तिताह़

मुह़र्रम शरीफ़ 1445 हिजरी में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने पहले घर से दूसरे मकान में शिफ़्ट हुए, नए मकान में शिफ़्टिंग का मुआ़मला भी बड़ा पुरज़ौक़ था। चन्द सादाते किराम को घर तशरीफ़ लाने की दा'वत दी गई और फिर अपने दोनों हाथों में सादाते किराम के हाथ ले कर क़सीदए बुर्दा शरीफ़ पढ़ते हुए नए मकान में दाख़िल हुए। घर में दाख़िल हो कर रोते हुए कुछ यूं फ़रमाया : नए घर में सादाते किराम के साथ शिफ़्टिंग इस लिये की, कि क़ब्र में भी सादाते किराम अपने हाथों से "**अर्‌ह़मुर्राह़िमीन**" के सिपुर्द करें।

दा'वते इस्लामी के दीनी कामों में यादे अहले बैत

दा'वते इस्लामी के दो अहम तरीन दीनी काम हैं : ﴾1﴿ इस पुर फ़ितन दौर में नेकी के रास्ते पर चलने और अपना मुहासबा करने के लिये "72 नेक आ'माल" पर अ़मल करना[1] और ﴾2﴿ हर महीने में कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना।

ज़रा ग़ौर करेंगे तो आप इन दो अहम तरीन दीनी कामों में भी यादे अहले बैत मुज़्मर (या'न छुपी हुई) पाएंगे। बल्कि एक में तो बिल्कुल ज़ाहिर है कि इस्लामी भाइयों के नेक आ'माल के रिसाले का नाम ही रुफ़क़ाए करबला की निस्बत से 72 नेक आ'माल है। जब कि दूसरे अहम तरीन दीनी काम हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले का मे'यार 72 घन्टे रखा गया है। गोया बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने हर मुबल्लिग़, मुअ़ल्लिम, मुरीद और फ़ॉलोवर को अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की यादों, इन के तसव्वुरात में रहने का दर्स दे रहे हैं।

शाने अहले बैत में बयानाते अमीरे अहले सुन्नत

सो फ़ीसद इस्लामी चेनल "दा'वते इस्लामी के चेनल" पर कई प्रोग्राम्ज़ शाने अहले बैते अत़्हार (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के बारे में हुए हैं। इस चेनल के आग़ाज़ होने से पहले जब ऑडियो बयानात का सिलसिला होता था उस वक़्त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तीन तीन घन्टे अहले बैते

1... "72 नेक आ'माल" के रिसाले का रोज़ाना वक़्त मुक़र्रर कर के जाएज़ा लीजिये और हर माह की पहली तारीख़ को अपने अ़लाक़े के ज़िम्मेदार को येह रिसाला जम्अ़ करवाइये। इस्लामी बहनों, स्टूडन्ड्स, बच्चों और स्पेशयल पर्सन्ज़ वग़ैरा के लिये अलग अलग नेक आ'माल के रसाइल तरतीब दिये गए हैं। इन का मुत़ालआ़ करने के लिये दा'वते इस्लामी की वेबसाइट विज़िट कीजिये और अच्छी अच्छी निय्यतों से दूसरों को भी शेयर कीजिये।

अत्हार की शानो अज़मत खड़े हो कर बयान की है। उन में से चन्द बयानात के नाम येह हैं : शाने अहले बैत, शहादत का बयान, करबला का ख़ूनीं मन्ज़र, करबला का ताराज कारवां वग़ैरा।

आप ने कई मरतबा अपने बयानात व तह़रीरात में जिस मुफ़स्सिरे कुरआन की तफ़्सीर को बयान किया है वोह भी एक "**सय्यिद बुज़ुर्ग**" हैं, उन का नाम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه है। आप कभी कभी किसी सय्यिद ज़ादे को देख कर इमामे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का येह शे'र झूम झूम कर पढ़ने लगते हैं :

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का   *तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 248)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

अहले बैते अत्हार की शान पर अमीरे अहले सुन्नत की 6 कुतुब

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अब तक (ज़िल ह़ज शरीफ़ 1445 हिजरी) तक़्रीबन 244 सफ़ह़ात पर अहले बैते अत्हार की शानो अ़ज़मत पर मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत के साथ कुतुबो रसाइल तह़रीर फ़रमाए हैं जिन के नाम येह हैं : ﴾1﴿ अहले बैते अत्हार की शानो अ़ज़मत पर 40 अह़ादीसे मुबारका "**फ़ैज़ाने अहले बैत**" (37 सफ़ह़ात) ﴾2﴿ मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा मौलाए काएनात ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा की शानो करामात पर मुश्तमिल रिसाला "**करामाते शेरे ख़ुदा**" (98 सफ़ह़ात) ﴾3﴿ नवासए रसूल ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِىَ اللهُ عَنْه की सीरत पर रिसाला "**इमामे ह़सन رَضِىَ اللهُ عَنْه की 30 ह़िकायात**" (28 सफ़ह़ात) ﴾4,5,6﴿ नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे

अ़र्श मक़ाम ह़ज़रते इमाम ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बे मिसाल जां निसारी व बहादुरी नीज़ करबला शरीफ़ के मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त पर मुश्तमिल तीन रसाइल बनाम : ﴾1﴿ "**इमामे हुसैन की करामात**" (41 सफ़ह़ात) ﴾2﴿ "**हुसैनी दूल्हा**" (16 सफ़ह़ात) ﴾3﴿ "**करबला का ख़ूनीं मन्ज़र**" (24 सफ़ह़ात) । इस के इ़लावा और कई कुतुब में ज़िम्नन कई वाक़िआ़त, करामात और अहले बैते अत़्हार के मुतअ़ल्लिक़ रिवायात मौजूद हैं । येह सब रसाइल मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ख़रीदे जा सकते हैं ।

अहले बैते अत़्हार की शान पर अमीरे अहले सुन्नत के 154 अश्आ़र

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने ता ह़ाल (8 ज़िल ह़ज शरीफ़ 1445 हिजरी) मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا, ह़सनैने करीमैन ह़ज़रते इमामे ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا और अहले बैत की शान में 8 मनाक़िब लिखे हैं । जिन्हें वसाइले बख़्शिश और वसाइले फ़िरदौस में पढ़ा और देखा जा सकता है । 17 अश्आ़र पर मुश्तमिल मन्क़बते अहले बैत "**क्यूं न हो रुत्बा बड़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का**", 23 अश्आ़र पर मुश्तमिल मन्क़बते मौला अ़ली "**या अ़लिय्यल मुर्तज़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा**", 17 अश्आ़र पर मुश्तमिल मन्क़बते शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا "**आप पर अल्लाह की रह़मत हो ह़ज़रत फ़ातिमा**"[1], नवासए रसूल ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

1... ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا और इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की येह मन्क़बत "तक़्दीर से मिली है मह़ब्बत हुसैन की" अभी प्रिन्ट नहीं हुई अलबत्ता दा'वते इस्लामी के यू ट्यूब चेनल से इन्हें देखा सुना जा सकता है ।

की विलादत (Birth) 15 रमज़ानुल मुबारक की मुनासबत से 15 अश्आ़र पर मुश्तमिल मन्क़बते इमामे ह़सन "**या ह़सन इब्ने अ़ली कर दो करम**", इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ से बे पनाह मह़ब्बतो उल्फ़त के सबब आप की शानो अ़ज़मत पर चार कलाम, तीन मनाक़िब और एक सलाम तह़रीर फ़रमाया है। 33 अश्आ़र पर मुश्तमिल मन्क़बत "**या शहीदे करबला फ़रियाद है**", 19 अश्आ़र पर मुश्तमिल मन्क़बत "**फिर बुला करबला, या शहे करबला**", 12 अश्आ़र पर मुश्तमिल मन्क़बत "**तक़्दीर से मिली है मह़ब्बत हुसैन की**" और 18 अश्आ़र पर मुश्तमिल सलाम "**करबला के जां निसारों को सलाम**" तह़रीर फ़रमाया है।

अहले बैते अत़्हार की शान पर अमीरे अहले सुन्नत के 88 ना'रे

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने ता ह़ाल (8 ज़िल ह़ज शरीफ़ 1445 हिजरी) मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہ, शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا, ह़सनैने करीमैन ह़ज़रते इमामे ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا और अहले बैत की शान में 88 ना'रे लिखे हैं। मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہ की शान में 18 ना'रे "**आ़शिक़े मुस्त़फ़ा, मुर्तज़ा मुर्तज़ा**", ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की शान में 15 ना'रे "**दुख़्तरे मुस्त़फ़ा, सय्यिदह फ़ात़िमा**", इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ की शान में 16 ना'रे "**साह़िबुल इत्तिक़ा, हैं ह़सन मुज्तबा**", ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ की शान में 22 ना'रे "**नवासए मुस्त़फ़ा, या शहीदे करबला**", और इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की शान में 17 ना'रे "**करम से हम पर, इमामे जा'फ़र**", तह़रीर फ़रमाए हैं।

"फ़ैज़ाने अ़ली" मसाजिद की ता'मीर

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने 21 रमज़ानुल मुबारक 1439 हिजरी (6 साल क़ब्ल) यौमे शहादते मौला अ़ली رضی اللہ عنہ के मौक़अ़ पर मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौला अ़ली رضی اللہ عنہ की याद में मसाजिद बनाने की तरग़ीब दिलाई।

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, ज़ुल क़ा'दह शरीफ़ 1439 मुत़ाबिक़ अगस्त 2018, स. 53, ब तग़य्युर)

दा'वते इस्लामी के शो'बे "**ख़ुद्दामुल मसाजिद वल मदारिस**" के ज़िम्मेदार से ली गई मा'लूमात के मुत़ाबिक़ الحمد للہ ! ता ह़ाल 121 मसाजिद इन मुबारक नामों "**फ़ैज़ाने अ़ली, फ़ैज़ाने ह़ैदर, फ़ैज़ाने मुश्किल कुशा, फ़ैज़ाने ह़सन, फ़ैज़ाने ह़ुसैन, फ़ैज़ाने फ़ात़िमा, फ़ैज़ाने अ़ली अक्बर, फ़ैज़ाने अ़ली असग़र**" से बन चुकी हैं।

बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी के वक़्त ख़्वाहिशे अमीरे अहले सुन्नत

अमीरे अहले सुन्नत जब 16 साल के बा'द 2018 में ह़ज पर गए और जब बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी का पुरकैफ़ वक़्त आया तो आप ने इ़श्क़े मदीना में डूब कर सादाते किराम से अपने उल्फ़तो मह़ब्बत भरे जज़्बात का कुछ इस त़रह़ इज़्हार फ़रमाया : बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी के लिये रवानगी का वक़्त है, काश ! कोई ऐसा सय्यिद ज़ादा तय्यार हो जाए जो मेरे गले में रस्सी डाल कर खींचता हुवा ले जाए कि आक़ा भागे हुए मुजरिम को पकड़ कर लाया हूं, आप इस की शफ़ाअ़त फ़रमा दें और इसे मुआ़फ़ फ़रमा दें और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने पड़ोस में इसे जगह इनायत फ़रमा दें।

हर साल एक कुरबानी

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़क़ीर (या'नी आ'ला हज़रत) का मा'मूल है हर साल एक कुरबानी हुज़ूरे अक्दस सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ से करता है और उस का गोश्त पोस्त (या'नी खाल) सब नज़्र हज़राते सादाते किराम करता है। (फ़तावा रज़विय्या, 20/456)

अमीरे अहले सुन्नत की अहले बैते अत्हार से महब्बत के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तरग़ीब पर आप की जानिब से हर साल कुरबानी के दिनों में चन्द सादाते किराम को कुरबानी के लिये न सिर्फ़ जानवर तोहफ़तन पेश किया जाता है बल्कि जानवर को चारा खिलाने, ज़ब्ह करने वग़ैरा का ख़र्च भी नज़्र किया जाता है। चन्द सालों से जारी इस नेक अमल में अब तक बीसियों जानवर जिन की रक़म लाखों रुपै बनती है सादाते किराम की ख़िदमत में पेश किये जा चुके हैं। وَلِلّٰهِ الْحَمْد

अत्तारी के ख़मीर में ग़द्दारी नहीं

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने जब से होश संभाला है, अपने दिल में प्यारे महबूबे करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत के चश्मे फूटते महसूस किये हैं। मुझे मेरे ग़ौसे पाक शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इश्क़े रसूल का जाम पिलाया, मेरे आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पिलाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मुझ पर येह ख़ुसूसी फ़ैज़ान है कि मुझे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से,

तमाम सह़ाबए किराम से, तमाम अहले बैते अत़्हार ख़ुसूसन शुहदाए करबला رَضِیَ اللہُ عَنۡہُم से बड़ा प्यार है। **अल्लाह** पाक की रह़मत से सादाते किराम का एह़तिराम मैं अपनी नस नस में पाता हूं और मैं उम्मीद करता हूं कि اِنۡ شَآءَاللہ जो मेरे ज़रीए़ ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ का मुरीद होगा, अ़त्तारी बनेगा اِنۡ شَآءَاللہ वोह कभी भी, कभी भी, कभी भी प्यारे प्यारे आक़ा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام, तमाम अहले बैते अत़्हार ब शुमूल मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा, ह़सनैने करीमैन, तमाम सह़ाबए किराम ब शुमूल ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللہُ عَنۡہُم, इन पाक हस्तियों से ग़द्दारी नहीं कर सकता बल्कि जो किसी दूसरे जामेए़ शराइत़ शैख़ का मुरीद होगा और मेरे सिल्सिले में त़ालिब होगा اِنۡ شَآءَاللہ वोह भी इन पाक हस्तियों का कभी भी बाग़ी नहीं बनेगा। (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1439)

सादाते किराम के लिये स्पेश्यल पैग़ाम

किसी मौक़अ़ पर चन्द सादाते किराम की त़रफ़ से कुछ परेशानियों का पता चला तो आप ने कुछ इस त़रह़ उन्हें जवाबी पैग़ाम भेज कर दिलजूई फ़रमाई :

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوۡلِہِ النَّبِیِّ الۡکَرِیۡم

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنۡہُ की जानिब से सादाते किराम की ख़िदमत में : اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ وَرَحۡمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ

अल्लाह करीम आप साह़िबान का इक़्बाल बुलन्द फ़रमाए, परेशानियां भी दूर करे, करबला वालों के सदक़े में सब्र भी अ़त़ा करे। आप

लोग वाक़ेई ऐसी आज़्माइश व इम्तिहान में मुब्तला हैं कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِيْظ । **अल्लाह** करीम आप सब पर रह़्म फ़रमाए और आप सब को करबला वालों के सब्र का ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाए । आमीन । हिम्मत रखिये ! सब्र कीजिये ! **अल्लाह** करीम आप की रोज़ी रोज़गार में भी बरकतें दे, आफ़तों मुसीबतों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को भी परेशानियां आईं, आप के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भी कड़ा इम्तिह़ान आया तो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब्र किया। करबला वालों पर कितने सख़्त इम्तिह़ानात आए उन्हों ने सब्र किया। आप ह़ज़रात भी सब्र कीजिये। **अल्लाह** करीम आप को सब्रो हिम्मत दे, आप सब को बे ह़िसाब बख़्शे और आप सब के सदक़े में मुझ गुनहगार को भी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से मुशर्रफ़ फ़रमाए। आप के नानाजान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस आप सब को भी और आप सब के सदक़े मुझे भी नसीब करे ।

اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلّی اللّٰه علیه واٰله وسلّم

अहम ज़िम्मेदारान में सादाते किराम

दा'वते इस्लामी के अहम ज़िम्मेदारान में सादाते किराम का फ़ैज़ान भी शामिल है । जैसे कि अलह़ाज सय्यिद मुह़म्मद आ़रिफ़ अ़ली शाह अ़त्त़ारी (महाराष्ट्र, हिन्द) ।

मह़ब्बते अहले बैत की एक अछूती (या'नी मुन्फ़रिद) मिसाल

अमीरे अहले सुन्नत के ख़ुसूसी मुआ़विन जो तक़रीबन हर वक़्त आप के साथ रहते हैं उन का नाम मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते

अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के मुबारक नाम की निस्बत से "अ़ली" है। जब कि उन के बेटे भी अमीरे अहले सुन्नत के साथ ही रहते हैं उन का नाम "ह़सन रज़ा" है। आप फ़रमाते हैं : "**ह़सन नाम पर मेरी जान क़ुरबान**" आप नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल हैं। बच्चा बच्चा होता है, कभी शरारत करता है तो कभी न करने का काम भी कर जाता है लिहाज़ा मैं इस बच्चे के नाम के साथ किसी ऐसे काम का ज़िक्र करना पसन्द नहीं करता। इस अदब के सबब मैं आ़म बोलचाल में इस को "मिठ्ठू" के नाम से बुलाता हूं। (मदनी मुज़ाकरा, 9 जून 2024)

इस अन्दाज़ में हमारे लिये भी दर्स है कि जब किसी शख़्स के नाम को अ़ज़मत वाली हस्ती से निस्बत हो जाए तो फिर उस नाम का अदबो एह़तिराम करना चाहिये चे जाएकि कोई बद नीसब इस निस्बत वाले नाम के बारे में ना मुनासिब बात कहे।

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से   और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

इ़श्क़ो मह़ब्बत भरी बात

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! "مَنْ عَامَلَنَا رَبِحَ **तरजमा : जो हम (या'नी आले रसूल) से मुआ़मला करता है फ़ाएदा पाता है**" के मिस्दाक़ जो सादाते किराम से ह़ुस्ने सुलूक और अदबो ता'ज़ीम का मुआ़मला करता है वोह दुन्या व आख़िरत में फ़ाएदा उठाता है। जिस तन्ज़ीम के सब से पहले मदनी मर्कज़ का इफ़्तिताह़ आले रसूल के मुबारक हाथों से हो, जिस तन्ज़ीम के बानी की सय्यिद ज़ादों से बे पनाह मह़ब्बत

के ऐसे अन्दाज़ हों और जिस तन्ज़ीम की कई अहम ज़िम्मेदारियों पर सादाते किराम तशरीफ़ फ़रमा हों, मुल्क में कई सय्यिद शहज़ादे मुख़्तलिफ़ मजालिस व शो'बाजात की सरपरस्ती फ़रमा रहे हों बल्कि बा'ज़ जगहों में दीनी काम करने और सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ़म करने का अ़ज़ीम मन्सब "**सय्यिद साह़िबान**" ही के पास हो।

थोड़ा नहीं पूरा ग़ौर कीजिये ! फिर आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत की उस दीनी तन्ज़ीम दा'वते इस्लामी को इन सादाते किराम की दुआ़ओं से क्यूं तरक़्क़ी नहीं मिलेगी ? क्यूं इस तन्ज़ीम को मदीने के पर नहीं लगेंगे और क्यूं न येह सय्यिदों के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का पैग़ाम आ़म करती नज़र आएगी। आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत अपनी ना'तिया किताब "वसाइले फ़िरदौस" में लिखते हैं :

या इलाही ! शुक्रिया अ़त्तार को तू ने किया शे'र गो मिदह़त सरा अस्ह़ाबो अहले बैत का

(वसाइले फ़िरदौस, स. 36)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
अमीरे अहले सुन्नत की वसिय्यत	1	सादाते किराम को 25 लाख रुपै का नज़राना	19
मुजद्दिदे वक़्त के कन्धों पर सुवारी	3		
सय्यिद साहिब की फ़रमाइश पर किताब लिख दी	6	12 सादात घरानों की ख़िदमत का ए'लान	20
फ़ैज़ाने रज़ा	6	इल्तिजाए अ़त्तार	20
सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना और ता'ज़ीमे सादात	7	पैग़ामात की रिकॉर्डिंग में सादाते किराम से इब्तिदा	22
ग़ज़ालिये दौरां का अदबो एह़तिराम	7		
मुरीदे कामिल पीरे कामिल का अ़क्स होता है	8	34 साल पहले की वसिय्यत	22
अहले बैते नबी की मह़ब्बत व ता'ज़ीम फ़र्ज़	9	नए आस्तानए आ़लिया का इफ़्तिताह़	23
सादाते किराम के फ़ज़ाइल पर 4 अह़ादीस	9	शाने अहले बैत में बयानाते अमीरे अहले सुन्नत	24
सय्यिद किसे कहते हैं ?	11		
मुझे या सय्यिदी न कहा जाए	12	शाने अहले बैत पर अमीरे अहले सुन्नत की 6 कुतुब	25
अदबो एह़तिराम के चन्द अन्दाज़	13		
सादाते किराम आगे तशरीफ़ ले आएं	14	शाने अहले बैत पर 154 अश्आ़र	26
सब से पहले फ़ैज़ाने मदीना का संगे बुन्याद	15	शाने अहले बैत पर 88 ना'रे	27
मदनी मर्कज़ का संगे बुन्याद	16	बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी का अन्दाज़	28
सह़ाबा व अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان	16	अ़त्तारी के ख़मीर में ग़द्दारी नहीं	29
सय्यिद साहिब की त़रफ़ पाउं न फैलाए	17	सादाते किराम के लिये स्पेशयल पैग़ाम	30
ख़ानदाने अमीरे अहले सुन्नत में अहले बैत की याद	18	मह़ब्बते अहले बैत की एक अछूती मिसाल	31
बिन्ते अ़त्तार का जहेज़	18	इश्क़ो मह़ब्बत भरी बात	32

ज़ियारते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बेहतरीन नुस्ख़ा

ह़ज़रते शैख़ अबुल मुवाहिब शाज़िली رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो शख़्स हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करना चाहता है उसे चाहिये कि दिन हो या रात आप का कसरत से ज़िक्र करता रहे और सादात व औलियाए किराम से मह़ब्बत रखे वरना ख़्वाब (में ज़ियारत) का दरवाज़ा उस पर बन्द हैं, क्यूं कि येह ह़ज़रात तमाम लोगों के सरदार है, येह जिन से नाराज़ होते हैं **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी उस से नाराज़ हो जाते हैं।

(افضل الصلوات علی سید السادات، ص127)

आ़शिके़ सह़ाबा व अहले बैत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी ना'तिया किताब "वसाइले बख़्शिश" में लिखते हैं :

हुब्बे सादात ऐ ख़ुदा दे वासिते़

अहले बैते पाक का फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 598)